REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 9 | JUNE - 2022

# मैत्रेयी पुष्पा के ललमनिया कहानी संग्रह में नारी प्रतिरोध

प्रियंका तिवारी[1] & डॉ. आशुतोष कुमार द्विवेदी[2]
[1]शोधार्थी, हिन्दी, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर, महाविद्यालय रीवा (म.प्र.).
[2]प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर, महाविद्यालय रीवा (म.प्र.).

**सारांशः**

मैत्रेयी पुष्पा के कहानियों का परिवेश ग्रामीण है। ग्रामीण जीवन में रीति–रिवाज को बहुत महत्व होता है। नागरी समाज रीति–रिवाज को सहज रूप में त्याग सकता है, किंतु ग्रामीण समाज नहीं। विवाह, पर्व–त्यौहार में रीति–रिवाज को बहुत महत्व होता है। विवाह में मुँह दिखाई की रस्म होती हैं। 'केतकी' कहानी में पंडित श्रीगोपाल की बहू केतकी ब्याह कर आते ही सबसे पहले मुँह दिखाई की रस्म बुआ ने ही की थी। घुँघट उठाते ही बुआ ठगी–सी रह गयी। आजादी के बाद के हिन्दी उपन्यास में नारी के तीन रूप दिखाई पड़ते हैं। पहले रूप में वह सदियों से चली आ रही शोषण और अत्याचार की स्थितियों की शिकार है। दूसरे रूप में वह नयी परिस्थितियों से पैदा हुई समस्याओं से जूझ रही है और तीसरे रूप में आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी होने, परम्परागत नारी संहिता की जकड़न को चुनौती देने संघर्षरत है।

**मुख्य शब्दः** *मैत्रेयी पुष्पा, कहानियाँ, ग्रामीण जीवन एवं रीति–रिवाज।*

**प्रस्तावनाः**

समकालीन उपन्यासों में स्त्री की समस्याओं को प्रमुख स्थान मिला। इसका कारण उपन्यासकारों का नवजागरण की चेतना से प्रभावित होना था। पर उस समय के पुरूष उपन्यासकारों ने परम्परागत नारी संहिता के चौखटे में ही स्त्री के उद्धार की बात की। स्त्री के लिए उस घेरे से बाहर निकलने का कोई द्वार नहीं था लेकिन आजादी मिलने और भारतीय संविधान लागू होने के बाद भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति में जबरदस्त बदलाव आ गया। 'ललमनिया' कहानी संग्रह का प्रकाशन 1996 में हुआ है। इस कहानी संकलन में 10 कहानियाँ संकलित है। 1. फैसला 2. सिस्टर 3. सेंध 4. अब फूल नहीं खिलते 5. रिजक 6. बोझ 7. पगला गयी है भागवती ! 8. छाँह 9. तुम किसकी हो बिन्नी? 10. ललमनियाँ। वर्तमान समय में शिक्षा का स्तर गिर रहा हैं। परीक्षा में नकल करना या पैसे देकर अंक बढ़ाना यह आम बात होती जा रही है। मैत्रेयी ने 'सेंध' नामक कहानी में इस स्थिति का चित्रण मिलता है। कलावती विधायक से मिलकर राजनीति में प्रवेश करती हैं। कलावती ने प्रवेशिका और विद्याविनोदिनी की परीक्षा जल्द ही उत्तीर्ण कर ली।'' विधायक जी के कारण वह सब भी सहुलियत से निपट गया–वे तो परीक्षा देने कभी गयी ही नहीं। कापी किसने लिखी, प्रश्नोत्तर किसने हल किये, यह वे क्या जानें? उन्होंने तो रंगबिरंगी सनदें सँभलकर जतन से रख ली।''[1] 'सेंध' कहानी की कलावती चुनाव

[1] मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : सेंध, पृष्ठ 42

का टिकट मांगने विधायक के पास पहुँचती हैं तब विधायक जी उसे जातीय राजनीति का पाठ पढ़ाते हुए कहते हैं, ''ब्राह्मण बहुल क्षेत्र हैं। जातिवाद को लेकर चलें तब भी जीत। रहे ठाकुरों के वोट, सो गंगासिंह तुम्हारे पति का मित्र ठहरा, तुमसे बाहर नहीं जाना चाहिए और तुम भी।''[2]

राजनीति में अब महिलाएँ बेहिचक आने लगी हैं। 'फैसला' कहानी की ईसुरिया कहती है, ''अब दिन गये कि जनी गूँगी–बहरी छिरिया की नाई हँकती रहे। बरोबरी का जमाना ठहरा। पिरधान बन गयी न बसुमती? इन्द्रा गाँधी की जै।''[3]

सेंध कहानी में विधायक जी कलावती को समझाते हुए कहते हैं, ''ऐसे नाजुक मौकों पर रेत–गर्द में ही मिलकर रहो–वहीं, गाँव में। समय पड़े तो बैलगाड़ी में चलो, पैदल यात्रा करो। प्रभाव इन्हीं बातों से बनता है, छबि निखरती हैं।''[4] इस पद्धति का यथार्थ चित्रण इनकी कहानियों में हुआ है।

रीति–रिवाज का पालन समाज में बड़ी कठोरता के साथ किया जाता है। ललमनियाँ कहानी के मौहरों के पिता की मृत्यु हुई, घर में खाने के लिए कुछ नहीं था, भूख से बच्चे परेशान थे माँ ने मौहरों को कहा, ''बेटी चुपके से ललमनियाँ कर आ। परोसा मिलेगा सो उसी परसाद के संग कई दिनों तक पानी पीते रहेंगे। लौटकर आई तो बापू का दाह करके लौट चुके थे लोग। मौहरो ने अम्मा को बताया,'' नहीं दिया अम्मा। घर की मालकिन ने बोला ब्याह के घर का परोसा मौत वाले घर में नहीं जाता। तू आयी क्यों बेटी?''[5]

## विश्लेषण –

मैत्रेयी की कहानियों में ग्रामीण तथा शहर के स्त्रियों का वर्णन मिलता है। 'बोझ' नामक कहानी की स्त्री आधुनिक स्त्री हैं। अपने बच्चे को बोझ मानकर उसे क्रैश में आया के पास भेजती हैं और खुद कलब जाती हैं। 'बोझ' कहानी में गोलू अपने मित्र अक्षय को कहता है, ''मम्मी कलब जाती हैं। तू जानता है अच्छय, कलब? बहौत बरा होता है।'' गोलू ने फिर छोटे–छोटे हाथ हवा में लहरा दिये,'' इत्ता बराऽऽ.....!''[6] इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि आज की नारी अपने परिवार से जादा आधुनिक बनकर क्लब आदि में रुचि दिखा रही है।

स्त्री जन्म को अभिशाप माना जाता है। पुत्र जन्म पर मिठाईयाँ बाँटी जाती है जबकि पुत्री जन्म पर नाकभौ सिकुड़े जाते हैं। वर्तमान काल में तो बेटी जन्म ही न ले इसकी व्यवस्था विज्ञान के सहारे कि जा रहा है। 'तुम किसकी हो बिन्नी ? ' कहानी में एक औरत कह रही थी,'' अरी से बात नाँय, का करें बेचारे ! सहर में तो तीन बच्चों का हुकुम है, अब इसे यहाँ न भेजते तो चाथा कैसे करेंगे।'' ''कै बेर तो इसकी माँ ने गरभ गिराये हैं, दूरबीन से दिखवाय लिये ! छोरी निकरी सो गिरवाय दई ! कसाइन है निरी !''[7] इस कथन से स्पष्ट होता है कि लड़के के लिए माता–पिता सोनोग्राफी करवाकर लड़की को जन्म होने से पहले ही मार देते हैं। एसे काम के लिए पढ़े लिखे लोग भी सहायता करते हैं बिन्नी की माता का टेस्ट करवाय पता चला की फिर से लड़की हैं तब, ''डॉ. अग्रवाल ने गर्भपात कराने की जगह का नाम लिख दिया–यदि इच्छा हो तो। उनका तथा गर्भपात–क्लीनिक का आपस में साझा रहता है न ! इसलिए।''[8] इनकी अनके कहानियाँ है। उसमें 'स्त्री' का चित्रण है।

'फैसला' कहानी की वसुमति को उसका पति रंजीत खड़ा करता है। रंजीत की मजबुरी हैं कि आरक्षण। वह अपनी पत्नी बसुमती को कहता है,'' सुन ले! अपनी औकात ! मजबूरी में खड़ी करनी पड़ी तू। मैं दो–दो पदवी नहीं रख सकता था एक साथ। सोचा था पत्नी से अधिक भरोसेमन्द कौन।''[9]

'भँवर' कहानी की विरमा को उसके पति ने त्याग दिया तब उसे अपने भाई के पास सहारा लेना पड़ा। भाई का परिवार खेती पर चलता है। किसान की आर्थिक स्थिति में अनेक विपताएँ हैं। विरमा को लगता है की अब उसका पति केशव उसे लेने नहीं आएगा और भाई के परिवार की भी आर्थिक स्थिति भी खराब है। ''चैत के

[2] वही, पृष्ठ 45
[3] मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : फैसला, पृष्ठ 9
[4] मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : सेंध, पृष्ठ 45
[5] मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : ललमनियाँ, पृष्ठ 143
[6] मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : बोझ, पृष्ठ 85
[7] मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : तुम किसकी हो बिन्नी?, पृष्ठ 120
[8] मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : तुम किसकी हो बिन्नी?, पृष्ठ 122.
[9] मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : फैसला, पृष्ठ 16

महीने का काटना कोई यों ही नहीं होता। नया नाज अभी खेतों में ही खड़ा है, कुछ हरा, कुछ पका। घर में जुड़ा–दबा नाज कब का निबट गया। पेट में कुछ डालकर भूख मिटाने के रोज के लाले ! 'सिस्टर' कहानी की सिस्टर डिसूजा आर्थिक कारण से विवाह नहीं हो सका। उसे अकेलेपन का सिकार होना पड़ा, ''और बार–बार प्रश्न करती हैं अपने आपसे, क्यों रह गयीं अकेली? वृद्ध अपाहिज पिता के कारण घर नहीं बनाया या नर्स के व्यस्त जीवन के कारण भूल गयी गृहस्थी का ख्याल?''[10] आर्थिक कारणों से उसे अकेलेपन को सहना पड़ा मकान के कर्ज का बोझ उस पर चढ़ गया। मकान पूरा भी नहीं हुआ था कि सिस्टर डिसूजा के पिता स्वर्गवासी हुए।

परिवार को चलाने के लिए महिलाएँ भी पुरुषों का साथ देती हैं। 'रिजक' कहानी की लल्लन दाई का काम करती हैं। प्रशिक्षित नर्स बन गयी। लल्लन। कब तक खींचेगी पूरी गृहस्थी का बोझ? बेआधार कैसे बैठा रहे कोई। भूखे पेट को कब तक मसोसे? कैसे थे हम? क्या धजा बना गई? मुकद्दर की मार कहो सो भी नहीं अपने रिजक से, अपने पेशे से बेईमानी करी, तो भोगेंगे नहीं?''[11] इस तरह लल्लन अपने पेशे से इमांदार रह कर परिवार की आर्थिक स्थिति में सहायक बनना चाहती हैं।

पुर्नविवाह को आदर्श न मानकर लड़की को आजन्म विधवा का जीवन बिताना पड़ता है। 'पगला गयी है भागवती' कहानी की जिज्जी के पति की मृत्यु हुई तब वह रोने लगती हैं। तब औरते जिज्जी को चुपाने लगती हैं,'' काहे को रोऊती ठकुरायन? करम की हेटी अभागिन, सो कछू देखवो नहीं बदो हतौ। इतेक लम्बी जिन्दगी, फिर अपनी जात बिरादरी में दूसरे ब्याह की रसम रीत? आँसू काढ़ जनमजली। आदमी नहीं रहौ और तें उजबक–सी रो रही।"'[12] इस संवाद से स्पष्ट होता है कि नीति और आदर्शों का पालन करने के लिए पुनर्विवाह के लिए अनुमती नहीं दी जाती हैं।

धार्मिक कार्य में नारी को महत्वपूर्ण स्थान हैं किन्तु साथ ही धर्म के नाम पर नारी का शोषण भी होता रहा है। देवदासी प्रथा, सती प्रथा आदि प्रथाओं का जन्म भी धर्म के कारण ही हुआ है यह भी भूलना नहीं होगा।

मानव और धर्म का अटूट सम्बन्ध हैं। अपना जीवन सुखी एवं निरापद बनाने के लिए मानव हमेशा धार्मिक कार्य करता रहता है। जैसे पूजा–पाठ या तप अनुष्ठान आदि। यहाँ तक कि अपने बच्चों के नाम रखते समय भी देवी देवताओं के नाम रखे जाते हैं। 'पगला गयी है भागवती.....!' कहानी की ''भागो को गीता के मंत्रों का ज्ञान भले न हो, साधना–उपासना का मरम उसकी भदेस–बुद्धि के बाहर की चीज है; और न उसे रामायण की चौपाइयाँ ही याद हैं, लेकिन उसने सती–अनुसुइया, सावित्री, नल–दमयन्ती और मदालसा की कथाएँ सुनी है। आख्यानों में अटूट श्रद्धा है, इसी कारण वह बिना नागा मन्दिर जाती हैं। अनुसुइया नाम उसे बहुत भाया बिटिया का नाम अनुसुइया रखा।''[13] 'छाँह' कहानी की सकीना मुस्लिम होकर भी दशहरे के आसपास ''जगह–जगह रामलीला। काली की सवारी ! हनुमान की सवारी ! चहल पीहल ! बतासो घूँघट में से माथा नवाती रही। कुतूहल–भरी आँखें घुमा–घुमाकर, देखती। झाँकियों को सराहती।''

## निष्कर्ष –

इस प्रकार मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचती हूँ कि समकालीन कथाकार 'मैत्रेयी' जी ने, ललमनिया कहानी संग्रह में ग्रामीणान्चल और ग्रामीण पात्रों की निर्माण करती हैं। इनकी कहानियों में, नारी समाज को फुसलाकर लोग अपना स्वार्थ पूरा करते हैं तथा समाज में लड़की को बढ़ाने के लिए अनास्था प्रकट करते हैं, लेखिका का मानना है कि नारी के प्रति आश्चर्य की बात यह है कि शिक्षित माता–पिता भी बालिकाओं को पढ़ाना लिखाना नहीं चाहते। कानून पूर्ति के लिए गाय जैसी महिला को चुनाव में खड़ा कर पुरुष अपनी सत्ता को चलाने का अभ्यस्त हो गया है। 'फैसला' कहानी की वसुमति को उसका पति अपना फैसला लेने नहीं देता है। इसके विरोध में वह अपने पति को ही बोट नहीं देती नारी समाज को परिवार के किसी वृद्ध पुरुष निर्भर रहना पड़ता है। सादी–विवाह जैसे अहम् फैसले भी परिवार का पुरुष ही लेता है। लड़की की राय को कोई तवज्जह नहीं दी

[10] मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : सिस्टर, पृष्ठ 22
[11] मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : रिजक, पृष्ठ 66
[12] मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : पगला गयी है भगवती, पृष्ठ 97
[13] मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : पगला गयी है भगवती, पृष्ठ 100.

जाती। इस प्रकार मैत्रेयी जी की कहानियों में नारी प्रतिरोध की बात कही गयी है, उनका मानना है कि आत्मनिर्भरता के बिना नारी स्वतन्त्र नहीं हो सकती। एक आत्मनिर्भर नारी की गरिमा अपने स्व की पहचान में है, वह अन्दर–अन्दर घुटने में विश्वास न कर उसे उन्मुक्त विचारों से निर्णय लेना श्रेयस्कर होगा तभी भारतीय नारी अपने अस्तित्व को पहचान सकेगी। यही लेखिका के कथा संग्रह में प्रतिरोध की स्थितियाँ सृजित हुई हैं।

## संदर्भ –


- मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : सेंध, पृष्ठ 42
- मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : सेंध, पृष्ठ 45
- मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : फैसला, पृष्ठ 9
- मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : ललमनियाँ, पृष्ठ 143
- मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : बोझ, पृष्ठ 85
- मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : तुम किसकी हो बिन्नी?, पृष्ठ 120
- मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : तुम किसकी हो बिन्नी?, पृष्ठ 122.
- मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : फैसला, पृष्ठ 16
- मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : सिस्टर, पृष्ठ 22
- मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : रिजक, पृष्ठ 66
- मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : पगला गयी है भगवती, पृष्ठ 97
- मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ : पगला गयी है भगवती, पृष्ठ 100.